ign in to edit and save changes to this file.

11_style sheet campu mail.qxd 8/20/2021 11:57 PM Page 1

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 6, अंक : 157 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शनिवार
21 अगस्त, 2021
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

पूर्व सीएम कल्याण सिंह की हालत और बिगड़ी, वेंटिलेटर सपोर्ट पर...6

खीरे की फसल का वैज्ञानिक प्रबंधनः डॉ आई एन शुक्ला

शाश्वत टाइम्स कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित साग भाजी अनुभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर आई.एन. शुक्ला ने बताया कि खीरा की फसल इस समय किसान भाइयों के खेत में लगी हुई है खीरे की फसल के प्रबंधन के बारे में डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि आजकल गर्मियों के समय खीरे की फसल में यदि बारिश ना हो तभी सिंचाई करें। इसके अतिरिक्त इसमें कीट नियंत्रण बहुत जरूरी है। इन कीटों के नियंत्रण के लिए नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिलीलीटर को 15 लीटर पानी में घोलकर फसलों में तर बतर कर छिड़काव करें। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी बताया कि खीरे की फसल में रोगों का भी प्रकोप बहुतायत से होता है इसमें विषाणु

जनित रोग मोजेक तथा फफूंद जनित रोग एंथ्रेक्नोज, मृदुरोमिल एवं चूर्णित असिता रोग होता है इसका नियंत्रण भी सभी किसान भाई नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिली लीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से रोगों का प्रबंधन हो जाता है। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि सलाद के रूप में संपूर्ण विश्व में खीरा का विशेष महत्व है। खीरे का रस पथरी में प्रयोग किया जाता है डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि खीरे में 95 फीसदी पानी होता है जो मेटाबॉलिज्म को मजबूत करता है इसके साथ ही खीरे में विटामिन सी बीटा कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण शरीर की इम्युनिटी बेहतर और मजबूत बनती है इसके साथ ही यह शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करता है खीरा में विटामिन ए विटामिन सी और फोलिक एसिड होता है इसमें फाइबर मैग्नीशियम और पोटेशियम सहित कई खनिज होते हैं उन्होंने कहा कि खीरे का सेवन लाभकारी है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:228 | देहरादून, शुक्रवार, 20 अगस्त, 2021 | पृष्ठ:08

खेलो के 101 खिलाड़ियों द्वारा को लेकर मिशन युवा लॉन्च करेगी। बनाकर 250 मिलीलीटर का 15 लीटर शुक्ला ने बताया कि सलाद के रूप में का सेवन लाभकारी है।

आठ दिवसीय राष्ट्रीय आभासी प्रशिक्षण का हुआ समापन

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर कास्ट एनसी परियोजना के तत्वाधान में पोषक फसलों में गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के नवीन दृष्टिकोण विषय पर दिनांक 12 से 19 अगस्त 2021 तक आयोजित आठ दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ समापन सत्र में आभासी परीक्षा आयोजित कर प्रतिभागियों का मूल्यांकन भी किया गया। सभी प्रतियोगियों में मूल्यांकन परीक्षा उत्तीर्ण की प्रतियोगियों ने आयोजित के संबंध में फीडबैक प्रोफार्मा भरकर ऑनलाइन जमा किया तथा 3 प्रतियोगियों कुमारी मोनिका जयसवाल कानपुर,डॉक्टर सुजाता तेलंगाना एवं डॉक्टर इवेरा तमिलमनी तमिलनाडु ने आयोजित प्रशिक्षण के संबंध में लाइव प्रतिक्रिया व्यक्त की प्रशिक्षण के कोर्स निदेशक डॉ सी एल मौर्य द्वारा प्रशिक्षण के संबंध में विस्तृत आख्या प्रस्तुत की गई उन्होंने सभी व्याख्याताओं द्वारा दिए गए व्याख्यान का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों, युवा वैज्ञानिकों को पोषक तत्वों के नवोन्मेषी तकनीक द्वारा बीज उत्पादन के क्षेत्र में सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना है।

डॉक्टर मौर्य अपने रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण से अवगत कराया कि प्रतिभागियों ने अपने संदेहों को स्पष्ट करने के लिए विद्वान वक्ताओं के साथ बातचीत की इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 63 विश्वविद्यालयों के 570 प्रतिभागी पंजीकृत हुए उनमें से 25% महिला प्रतिभागी रही विभिन्न विषयों पर कुल 12 व्याख्यान देश के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा किए गए प्रशिक्षण आयोजक मंडल की सदस्य डॉ श्वेता ने समापन सत्र का संचालन करते हुए मुख्य अतिथि, कुलपति, कोर्स डायरेक्टर डॉ सीएल मौर्या और विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं शिक्षकगण, आयोजक मंडल, सूचना तकनीकी मंडल, अन्य सहायक कर्मियों, प्रतिभागियों का स्वागत किया कार्यक्रम के अंत में डॉ राजीव ने समस्त अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

Sign in to edit and save changes to this file.

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, शनिवार, 21 अगस्त, 2021, वर्ष : 12, अंक : 304, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

खीरा में कई खनिज का मिश्रण जो शरीर की इम्युनिटी बनाते हैं बेहतर और मजबूत

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। गर्मियों के समय खेतों में लगी खीरे की फसल मे बारिश ना होने की स्थिति में सिंचाई करनी चाहिए हीरे की फसल मे कीट नियंत्रण की आवश्यकता होती है। सीएसएयू के कल्याणपुर स्थित साग भाजी और विभाग के वैज्ञानिक डॉ. आई. एन. शुक्ला ने बताया कि खीरे की फसल को एफिड, फल मक्खी, रेड पंपकिन बीटल आदि कीट नुकसान पहुंचाते हैं जिनसे नियंत्रण के लिए ढाई सौ मिलीलीटर नीम का काढ़ा बनाकर 15 लीटर पानी में घोलकर फसलों में तर बतर कर छिड़काव करना चाहिए।

उन्होंने किसानों को बताया कि खीरे की फसल में विषाणु जनित रोग मोजेक तथा फफूंद जनित रोग एंथ्रेक्नोज, मृदुरोमिल एवं चूर्णित असिता रोग होता है जिसका नियंत्रण नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिली लीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से रोगों का प्रबंधन हो जाता है।

डॉ. शुक्ला ने बताया कि खीरे का प्रयोग पूरे विश्व में सलाद के साथ उपवास के समय फलाहार के रूप में किया जाता है यह पीलिया, प्यास, ज्वर शरीर की जलन एवं चर्म रोग में लाभप्रद होने के साथ इसके रस का प्रयोग पथरी में भी किया जाता है। उन्होंने बताया कि खीरे में 95 फीसदी पानी होता है जो मेटाबॉलिज्म को मजबूत करता है इसमे पाए जाने वाले विटामिन सी बीटा कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट शरीर की इम्युनिटी बेहतर और मजबूत बनाते है खीरा में विटामिन ए विटामिन सी और फोलिक एसिड होता है इसमें फाइबर मैग्नीशियम और पोटेशियम सहित कई खनिज होते हैं।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:228 | देहरादून, शुक्रवार , 20 अगस्त, 2021 | पृष्ठ:08

खीरे की खेती के प्रबंधन के बारे में दी गई जानकारी

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित साग भाजी अनुभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर आई.एन. शुक्ला ने बताया कि खीरा की फसल इस समय किसान भाइयों के खेत में लगी हुई है खीरे की फसल के प्रबंधन के बारे में डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि आजकल गर्मियों के समय खीरे की फसल में यदि बारिश न हो तभी सिंचाई करें इसके अतिरिक्त इसमें कीट नियंत्रण बहुत जरूरी है उन्होंने किसान भाइयों को बताया कि खीरे की फसल में एफिड, फल मक्खी, रेड पंपकिन बीटल आदि कीटों द्वारा फसल को नुकसान पहुंचाया जाता हैं इन कीटों के नियंत्रण के लिए नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिलीलीटर को 15 लीटर

पानी में घोलकर फसलों में तर बतर कर छिड़काव करें उन्होंने किसान भाइयों को यह भी बताया कि खीरे की फसल में रोगों का भी प्रकोप बहुतायत से होता है। इसमें विषाणु जनित रोग मोजेक तथा फफूंद जनित रोग एंथ्रेक्नोज, मृदुरोमिल एवं चूर्णित असिता रोग होता है। इसका नियंत्रण भी सभी किसान भाई नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिली लीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से रोगों का प्रबंधन हो जाता है डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि सलाद के रूप में संपूर्ण विश्व में खीरा का विशेष महत्व है खीरा को सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है पीलिया, प्यास, ज्वर शरीर की जलन एवं चर्म रोग में लाभप्रद है खीरे का रस पथरी में प्रयोग किया जाता है डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि खीरे में 95 फीसदी पानी होता है जो मेटाबॉलिज्म को मजबूत करता है इसके साथ ही खीरे में विटामिन सी बीटा कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण शरीर की इम्युनिटी बेहतर और मजबूत बनती है इसके साथ ही यह शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करता है खीरा में विटामिन ए विटामिन सी और फोलिक एसिड होता है इसमें फाइबर मैग्नीशियम और पोटेशियम सहित कई खनिज होते हैं उन्होंने कहा कि खीरे का सेवन लाभकारी है।

खीरे की फसल में कीट होने पर दवा का छिड़काव जरूरी

कानपुर, 20 अगस्त। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित साग भाजी अनुभाग के वैज्ञानिक डॉक्टर आई.एन. शुक्ला ने बताया कि वर्तमान में किसान भाइयों के खेत में लगी हुई है खीरे की फसल के प्रबंधन को आवश्यकत बताया है। वैज्ञानिक ने कहाकि आजकल गर्मियों के समय खीरे की फसल में यदि बारिश ना हो तभी सिंचाई करें। इसके अतिरिक्त इसमें कीट नियंत्रण बहुत जरूरी है।उन्होंने किसान भाइयों को बताया कि खीरे की फसल में एफिड, फल मक्खी, रेड पंपकिन बीटल आदि कीटों द्वारा फसल को नुकसान पहुंचाया जाता हैं इन कीटों के नियंत्रण के लिए नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिलीलीटर को 15 लीटर पानी में घोलकर फसलों में तर बतर कर छिड़काव करें। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी बताया कि खीरे की फसल में रोगों का भी प्रकोप बहुतायत से होता है इसमें विषाणु जनित रोग मोजेक तथा फफूंद जनित रोग एंथ्रेक्नोज, मृदुरोमिल एवं चूर्णित असिता रोग होता है इसका नियंत्रण भी सभी किसान भाई नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिली लीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से रोगों का प्रबंधन हो जाता है। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि सलाद के रूप में संपूर्ण विश्व में खीरा का विशेष महत्व है खीरा को सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है पीलिया, प्यास, शरीर की जलन एवं चर्म रोग में लाभप्रद है। खीरे का रस पथरी में प्रयोग किया जाता है डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि खीरे में 95 फ़ीसदी पानी होता है जो मेटाबॉलिज्म को मजबूत करता है इसके साथ ही खीरे में विटामिन सी बीटा कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण शरीर की इम्युनिटी बेहतर और मजबूत बनती है इसके साथ ही यह शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करता है खीरा में विटामिन ए विटामिन सी और फोलिक एसिड होता है इसमें फाइबर मैग्नीशियम और पोटेशियम सहित कई खनिज होते हैं उन्होंने कहा कि खीरे का सेवन लाभकारी है।

www.facebook.com/worldkhabaarexpress www.twitter.com/worldkhabaarexpress www.youtube.com/worldkhabaarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

20 अगस्त 2021, शुक्रवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarex

सीएसए के साग भाजी अनुभाग के वैज्ञानिक ने दिए किसानों को टिप्स;

खीरे की फसल का वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरीः डॉ. शुक्ला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित साग-भाजी अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने बताया कि खीरा की फसल इस समय खेतों में लगी हुई है। खीरे की फसल के प्रबंधन के बारे में उन्होंने बताया कि आजकल गर्मियों के समय में खीरे की फसल में जब बारिश ना हो तभी सिंचाई करें। इसके अतिरिक्त इसमें कीट नियंत्रण बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि खीरे की फसल में एफिड, फल मक्खी, रेड पंपकिन बीटल आदि कीट लग जाते है और फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। इन कीटों के नियंत्रण करने के लिए नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिलीलीटर को 15 लीटर पानी में घोलकर फसलों में तर बतर कर छिड़काव करें। खीरे की फसल में रोगों का भी प्रकोप बहुतायत से होता है, इसमें विषाणु जनित रोग मोजेक तथा फफूंद जनित रोग एंथ्रेक्नोज, मृदुरोमिल व चूर्णित असिता रोग होता है। इसका नियंत्रण करने के लिए नीम का काढ़ा बनाकर 250 मिली लीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से रोगों का प्रबंधन हो जाता है। सलाद के रूप में पूरे विश्व में खीरा का विशेष महत्व है। खीरा को सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। पीलिया, प्यास, ज्वर शरीर की जलन व चर्म रोग में यह लाभप्रद है। खीरे का रस पथरी में प्रयोग किया जाता है। खीरे में 95 फीसदी पानी होता है जो मेटाबॉलिज्म को मजबूत करता है। इसके साथ ही खीरे में विटामिन सी, बीटा कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण शरीर की इम्युनिटी बेहतर और मजबूत बनती है। यह शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करता है। खीरा में विटामिन ए-सी और फोलिक एसिड होता है। इसमें फाइबर मैग्नीशियम और पोटेशियम सहित कई खनिज होते हैं। उन्होंने कहा कि खीरे का सेवन लाभकारी है।

राष्ट्रीय आभासी प्रशिक्षण का समापन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कास्ट एनसी परियोजना के तत्वाधान में पोषक फसलों में गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के नवीन दृष्टिकोण विषय पर 12 आयोजित 8 दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। समापन सत्र में आभासी परीक्षा आयोजित कर प्रतिभागियों का मूल्यांकन भी किया गया। सभी प्रतियोगियों में मूल्यांकन परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रतियोगियों ने आयोजित के संबंध में फीडबैक प्रोफार्मा भरकर ऑनलाइन जमा किया तथा तीन प्रतियोगियों कुमारी मोनिका जयसवाल कानपुर, डॉक्टर सुजाता तेलंगाना व डॉ. इवेरा तमिलमनी तमिलनाडु ने आयोजित प्रशिक्षण के संबंध में लाइव प्रतिक्रिया व्यक्त की। प्रशिक्षण के कोर्स निदेशक डॉ. सीएल मौर्य ने प्रशिक्षण के संबंध में विस्तृत आख्या प्रस्तुत की। उन्होंने सभी व्याख्याताओं के दिए गए व्याख्यान का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों, युवा वैज्ञानिकों को पोषक तत्वों के नवोन्मेषी तकनीक के जरिए बीज उत्पादन के क्षेत्र में सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना है। डॉ. मौर्य अपनी रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण से अवगत कराया कि प्रतिभागियों ने अपने संदेहों को स्पष्ट करने के लिए विद्वान वक्ताओं के साथ बातचीत की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 63 विश्वविद्यालयों के 570 प्रतिभागी रजिस्टर्ड हुए, उनमें से 25 फीसदी महिला प्रतिभागी रही। विभिन्न विषयों पर कुल 12 आख्यान देश के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने किए। प्रशिक्षण आयोजक मंडल की सदस्य डॉ. श्वेता ने समापन सत्र का संचालन करते हुए मुख्य अतिथि, कुलपति, कोर्स डॉयरेक्टर डॉ. सीएल मौर्या और विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं शिक्षक, आयोजक मंडल, सूचना तकनीकी मंडल, अन्य सहायक कर्मियों, प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. राजीव ने समस्त अतिथियों व प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

7:10 AM
611ffa12192c311.pdf

पोषक फसलों में गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन का प्रशिक्षण

कानपुर। सीएसए कास्ट एनसी परियोजना के तत्वाधान में पोषक फसलों में गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के नवीन दृष्टिकोण विषय पर दिनांक 12 से 19 अगस्त 2021 तक आयोजित आठ दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। समापन सत्र में आभासी परीक्षा आयोजित कर प्रतिभागियों का मूल्यांकन भी किया गया सभी प्रतियोगियों में मूल्यांकन परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रतियोगियों ने आयोजित के संबंध में फीडबैक प्रोफार्मा भरकर ऑनलाइन जमा किया। तथा 3 प्रतियोगियों कुमारी मोनिका जयसवाल कानपुर,डॉक्टर सुजाता तेलंगाना एवं डॉक्टर इवेरा तमिलमनी तमिलनाडु ने आयोजित प्रशिक्षण के संबंध में लाइव प्रतिक्रिया व्यक्त की। प्रशिक्षण के कोर्स निदेशक डॉ सी एल मौर्य द्वारा प्रशिक्षण के संबंध में विस्तृत आख्या प्रस्तुत की गई। उन्होंने सभी व्याख्याताओं द्वारा दिए गए व्याख्यान का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
ख़बर एक्सप्रेस

20 अगस्त 2021, शुक्रवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarex

राष्ट्रीय आभासी प्रशिक्षण का समापन

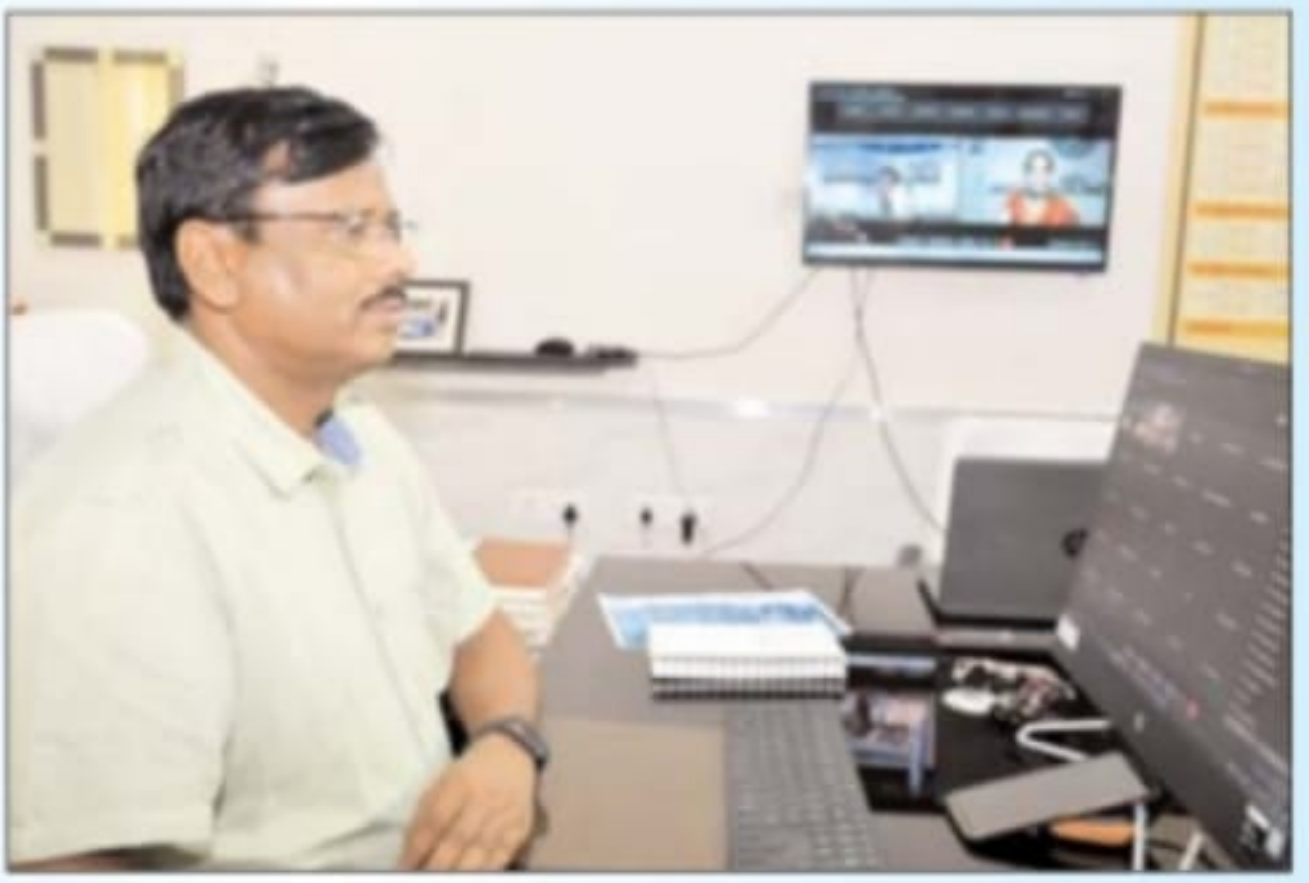

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कास्ट एनसी परियोजना के तत्वाधान में पोषक फसलों में गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के नवीन दृष्टिकोण विषय पर 12 आयोजित 8 दिवसीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। समापन सत्र में आभासी परीक्षा आयोजित कर प्रतिभागियों का मूल्यांकन भी किया गया। सभी प्रतियोगियों में मूल्यांकन परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रतियोगियों ने आयोजित के संबंध में फीडबैक प्रोफार्मा भरकर ऑनलाइन जमा किया तथा तीन प्रतियोगियों कुमारी मोनिका जयसवाल कानपुर, डॉक्टर सुजाता तेलंगाना व डॉ. इवेरा तमिलमनी तमिलनाडु ने आयोजित प्रशिक्षण के संबंध में लाइव प्रतिक्रिया व्यक्त की। प्रशिक्षण के कोर्स निदेशक डॉ. सीएल मौर्य ने प्रशिक्षण के संबंध में विस्तृत आख्या प्रस्तुत की। उन्होंने सभी व्याख्याताओं के दिए गए व्याख्यान का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों, युवा वैज्ञानिकों को पोषक तत्वों के नवोन्मेषी तकनीक के जरिए बीज उत्पादन के क्षेत्र में सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना है। डॉ. मौर्य अपनी रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण से अवगत कराया कि प्रतिभागियों ने अपने संदेहों को स्पष्ट करने के लिए विद्वान वक्ताओं के साथ बातचीत की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 63 विश्वविद्यालयों के 570 प्रतिभागी रजिस्टर्ड हुए, उनमें से 25 फीसदी महिला प्रतिभागी रही। विभिन्न विषयों पर कुल 12 आख्यान देश के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने किए। प्रशिक्षण आयोजक मंडल की सदस्य डॉ. श्वेता ने समापन सत्र का संचालन करते हुए मुख्य अतिथि, कुलपति, कोर्स डॉयरेक्टर डॉ. सीएल मौर्या और विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं शिक्षक, आयोजक मंडल, सूचना तकनीकी मंडल, अन्य सहायक कर्मियों, प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. राजीव ने समस्त अतिथियों व प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.co

स्वास्थ्य संरक्षण के लिए खीरे का सेवन लाभकारी

कानपुर (एसएनबी)। स्वास्थ्य संरक्षण के दृष्टिकोण से खीरे का सेवन वहुत लाभकारी है। सलाद के रूप में संपूर्ण विश्व मे खीरे का विशेष महत्व है। खीरे को सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। खीरे की सव्जी व अन्य व्यंजन भी वनाये जाते हैं।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कल्यानपुर स्थित साग भाजी अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ.आईएन शुक्ला के अनुसार पीलिया, प्यास, ज्वर, शरीर की जलन, एवं चर्म रोग में खीरे का सेवन लाभप्रद है। खीरे के रस का प्रयोग पथरी के इलाज में भी किया जाता है। उन्होंने वताया कि खीर में 95 फीसद पानी होता है तो मेटावॉलिज्म को मजवूत करता है। इसके साथ ही खीरे में विटामिन सी, वीटा कैरोटीन जैसे एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण शरीर की इम्युनिटी वेहतर और मजवूत वनती है। यह शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करता है। खीरा में विटामिन ए, विटामिन सी और फोलिक एसिड होता है। इसमें फाइवर, मैग्नीशियम और पोटेशियम सहित कई खनिज होते हैं।

नीम के काढ़े से खीरे को कीटों व रोग से बचायें किसान

साग भाजी वैज्ञानिक डॉ.आईएन शुक्ला ने खीरे की खेती करने वाले किसानों को खीरे की फसल को कीटों से वचाने का उपाय करने की सलाह दी है। उनके मुताविक खीरे की फसल में एफिड, फल मक्खी, रेड पंपकिन वीटल आदि कीटों द्वारा नुकसान पहुंचाया जाता है। इसके अलावा विषाणु जनित मोजेक तथा फफूंद जनित रोग एंथ्रेक्नोज, मृदुरोमिल एवं चूर्णित असिता रोग भी वहुतायत से होता है। डॉ.शुक्ला ने कहा कि खीरे की फसल को रोगों से वचाने व कीटों के नियंत्रण के लिए नीम का काढ़ा वना 250 मिली को 15 लीटर पानी में मिला कर घोल को फसल में तरव्तर कर छिड़काव करना चाहिए।

कानपुर। शनिवार • 21 अगस्त • 2021

राष्ट्रीय सहारा

पोषकतत्वों से युक्त बीजों के उत्पादन पर जोर

कानपुर। कुपोषण की समस्या के निवारण के लिए कृषि विभाग का जोर अब पोषकतत्वों से भरपूर फसलों के लिए नवोन्मेषी तरीके से शोध कर गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन पर है। इस लक्ष्य को लेकर सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी कास्ट एनसी परियोजना के तहत आयोजित आठ दिवसीय राष्ट्रीय आभासी प्रशिक्षण कार्यक्रम गुरुवार को संपन्न हुआ। समापन पर सभी प्रतिभागियों की ऑनलाइन ही परीक्षा ली गई, जिसमें सभी उत्तीर्ण घोषित किये गये। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में 63 विश्वविद्यालयों के 570 प्रतिभागियों की भागीदारी रही, जिनमें 25 फीसद महिलाएं थीं। कोर्स डायरेक्टर डॉ. सीएल मौर्य ने विश्वास जताया कि इस प्रशिक्षण से युवा वैज्ञानिक नवोन्मेषी तकनीक द्वारा पोषकतत्वों से युक्त बीज उत्पादन के क्षेत्र में सशक्त व आत्मनिर्भर बन सकेंगे।